भूखे सोने को अभिशप्त

भुखमरी के मामले में भारत का हाल भी बहुत बुरा है। भारत की आबादी का लगभग पांचवां हर हिस्सा हर रोज भूखे सोने के लिए विवश है और भुखमरी हमारे यहां भी हर साल अनेक जाने ले रही है। तेजी से महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर भारत में तकरीबन 20 करोड़ लोग भूखे पेट सोने को मजबूर हैं और प्रतिदिन 3000 बच्चे भूख से मर जाते हैं। यह जानकारी ग्लोबल हंगर इंडेक्स के आंकड़ों से मिली है। पिछले महीने जारी ग्लोबल हंगर इंडेक्स में जिन 118 देशों की सूची जारी की गई है उनमें भारत का स्थान 97वां है। मंगल पर अपना यान भेजने वाले देश भारत में भूख के खिलाफ जंग सबसे बड़ी चुनौती है। बच्चों में कुपोषण और उनकी मृत्यु दर का स्तर बेहद चिंताजनक है। यहां तक कि नेपाल और श्रीलंका की स्थिति भारत से बेहतर है जबकि पाकिस्तान और बंगलादेश जैसे पिछड़े देशों में स्थिति और भी बुरी है।

■ रूप चौधरी

संयुक्त राष्ट्र की ओर से हाल ही में जारी एक रिपोर्ट से खुलासा हुआ है कि दुनिया में 85 करोड़ 30 लाख लोग भुखमरी का शिकार हैं। वर्ष 2030 तक के लिए वैश्विक स्तर पर खाद्य सुरक्षा और पोषण पर जारी की गई इस रिपोर्ट में कहा गया है कि जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों और हिंसक संघर्षों के कारण पिछले एक दशक में पहली बार इस साल वैश्विक स्तर पर भुखमरी में 11 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि बीते साल भूखे लोगों की संख्या दुनिया में जहां 81 करोड़ 50 लाख थी वहीं इस साल तीन करोड़ 80 लाख बढ़कर 85 करोड़ 30 लाख हो गई है। इसके पीछे जलवायु परिवर्तन और दुनिया के विभिन्न हिस्सों में हो रहे हिंसक संघर्षों की बड़ी भूमिका है। संयुक्त राष्ट्र की पांच प्रमुख एजेंसियों के अध्यक्षों ने रिपोर्ट की संयुक्त प्रस्तावना में लिखा है कि यह खतरे की घंटी है जिसे हम अनसुना नहीं कर सकते। जब तक हम मिलकर खाद्य सुरक्षा के लिए खतरा पैदा करने वाले कारणों को खत्म करने का प्रयास नहीं करेंगे, तब तक 2030 तक दुनिया से कुपोषण खत्म करने का लक्ष्य हासिल नहीं हो पाएगा। एक सुरक्षित और समग्र रूप से विकसित समाज के लिए यह पहली शर्त है।

यह रिपोर्ट संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन, अंतरराष्ट्रीय कृषि विकास कोष, बाल विकास कोष, विश्व खाद्य कार्यक्रम और विश्व स्वास्थ्य संगठन की ओर से मिलकर तैयार की गई है। रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में भुखमरी और कुपोषण से ग्रस्त बच्चों की संख्या सबसे ज्यादा हिंसाग्रस्त क्षेत्रों में है। दक्षिणी सूडान इसका ज्वलंत उदाहरण है। इस साल के शुरू में यहां अकाल पड़ा था। युद्धग्रस्त नाइजीरिया, सोमालिया और यमन में भी कुछ ऐसे ही हालात हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार जिन क्षेत्रों में शांति है वहां भी हालात सामान्य नहीं है। वहां जलवायु परिवर्तन कहर बरपा रहा है। अल नीनो के प्रभाव से इन क्षेत्रों में सूखे और बाढ़ जैसी प्राकृतिक विपदाएं खाद्यान्न संकट उत्पन्न कर रही हैं। इसके अलावा वैश्विक आर्थिक मंदी ने भी हालात खराब किए हैं। भुखमरी के मामले में भारत का हाल भी बहुत बुरा है। भारत की आबादी का लगभग पांचवां हर हिस्सा हर रोज भूखे सोने के लिए विवश है और भुखमरी हमारे यहां भी हर साल अनेक जाने ले रही है। तेजी से महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर भारत में तकरीबन 20 करोड़ लोग भूखे पेट सोने को मजबूर हैं और प्रतिदिन 3000 बच्चे भूख से मर जाते हैं। यह जानकारी ग्लोबल हंगर इंडेक्स के आंकड़ों से मिली है। पिछले महीने जारी ग्लोबल हंगर इंडेक्स में जिन 118 देशों की सूची जारी की गई है उनमें भारत का स्थान 97वां है। मंगल पर अपना यान भेजने वाले देश भारत में भूख के खिलाफ जंग सबसे बड़ी चुनौती है। बच्चों में कुपोषण और उनकी मृत्यु दर का स्तर बेहद चिंताजनक है। यहां तक कि नेपाल और श्रीलंका की स्थिति भारत से बेहतर है जबकि पाकिस्तान और बंगलादेश जैसे पिछड़े देशों में स्थिति और भी बुरी है। इस सच्चाई से इनकार नहीं किया जा सकता कि दुनिया में भुखमरी बढ़ रही है और भूखे लोगों की करीब 23 फीसदी आबादी भारत में रहती है। तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो भारत में भूख की समस्या लगभग उत्तर कोरिया जैसी ही है। भारत में पांच साल

गेरदा बेरगर

से कम उम्र के 38 प्रतिशत बच्चे सही पोषण के अभाव में जीने को विवश है जिसका असर मानसिक और शारीरिक विकास, पढ़ाई-लिखाई और बौद्धिक क्षमता पर पड़ता है। रिपोर्ट की भाषा में ऐसे बच्चों को 'स्टन्टेड' कहा गया है। पड़ोसी देश, श्रीलंका और चीन का रिकॉर्ड इस मामले में भारत से बेहतर हैं जहां क्रमशः करीब 15 प्रतिशत और 9 प्रतिशत बच्चे कुपोषण और अवरुद्ध विकास के पीड़ित हैं। भारतीय महिलाओं के हाल भी कोई अच्छे नहीं हैं। रिपोर्ट बताती है कि युवा उम्र की 51 फीसदी महिलाएं एनीमिया से पीड़ित हैं यानी उनमें खून की कमी है। कुल मिलाकर जैसे-जैसे हमारी आबादी बढ़ रही है, समस्याएं भी बढ़ रही हैं और जो चुनौतियां हैं वे पहले से जटिल होती जा रही हैं।

संयुक्त राष्ट्र की उम्मीदें

भुखमरी से लड़ाई के मामले में वैश्विक स्तर पर भारत की स्थिति भले ही काफी खराब हो लेकिन संयुक्त राष्ट्र का मानना है कि इसमें जल्द ही सकारात्मक बदलाव आएगा। भारत के पहले दौरे पर आई संयुक्त राष्ट्र की सहायक महासचिव गेरदा वेरबर्ग का मानना है कि वह देश की रफ्तार और काम करने के समावेशी तरीके से बहुत प्रभावित हैं। हालांकि सहायक महासचिव का यह भी कहना है कि भारत में कई चुनौतियां मुंहबाए खड़ी हैं लेकिन अनुमान है कि वैश्विक भूखमरी सूचकांक यानी ग्लोबल हंगर इंडेक्स (जीएचआई) समेत पोषण मामले में भी भारत जल्द ही प्रगति करेगा। गौरतलब है कि वेरबर्ग संयुक्त राष्ट्र के पोषण संवर्धन अभियान की समन्वयक भी हैं। उनका कहना है कि पोषण वृद्धि अभियान साल 2010 में शुरू हुआ था। इसके तहत संयुक्त राष्ट्र कुपोषण खत्म करने के लिए 59 देशों के साथ मिलकर काम कर रहा है। महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और झारखंड इस अभियान के सदस्य हैं। इस अभियान की समन्वयक होने के नाते ही उनका कहना है कि आज की स्थिति के मुकाबले यदि महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में आने वाले तीन सालों में कुपोषण से प्रभावित बच्चों की संख्या घटती है तो वे आगे और प्रगति की ओर तेजी के साथ बढ़ेंगे। ■■

भारत में भूख, कुपोषण की वजह

- 40 प्रतिशत फल-सब्जियां और 20 प्रतिशत अनाज खराब सप्लाई चेन के कारण बर्बाद हो जाता है।
- बी.पी.एल. परिवार खाने-पीने पर 70 प्रतिशत व ए.पी.एल. परिवार 50 प्रतिशत खर्च करते हैं।
- शहरी वर्किंग क्लास 30 प्रतिशत खाने-पीने पर खर्च करता हैं।
- जी.डी.पी. में खेतीबाड़ी का योगदान 2013 में 13.7 प्रतिशत है।
- भारत में कृषि क्षेत्र में 50 प्रतिशत लोग कार्यरत हैं।

भारत के संदर्भ में कुछ तथ्य

- आबादी के छठे हिस्से को पर्याप्त पोषक पदार्थ नहीं मिल पाते।
- 30.7 प्रतिशत बच्चे (5 साल से कम उम्र के) भारत में कम वजन के हैं।
- 58 प्रतिशत बच्चों का विकास 2 साल से कम उम्र में रुक जाता है।
- 4 में से हर 1 बच्चा भारत में कुपोषण का शिकार है।
- 3,000 बच्चे कुपोषण से पैदा होने वाली बीमारियों के कारण रोज मरते हैं।
- दुनियाभर में 5 साल से कम उम्र में मरने वाले बच्चों में भारत का हिस्सा 24 प्रतिशत है।
- 30 प्रतिशत नवजात शिशुओं की मौत हमारे यहां होती है।

वैश्विक आंकड़े

- दुनिया के बेहद गरीब लोगों का 64 प्रतिशत हिस्सा सिर्फ 5 देशों में रहता है।
- 20,000 बच्चे दुनियाभर में भूख के कारण रोज मरते हैं।
- 80 प्रतिशत लोग 10 डॉलर प्रतिदिन से कम पर गुजर-बसर करते हैं।
- दुनिया में हर 9 में से 1 आदमी रोज भूखे पेट सोने को मजबूर है।
- दुनिया के टॉप 85 अमीर लोगों की कुल सम्पत्ति 3.5 अरब डॉलर सबसे गरीब लोगों यानी दुनिया की आधी आबादी की सम्पत्ति के बराबर है।
- 80.5 करोड़ लोगों को दुनिया में भरपेट खाने को नहीं मिलता।
- हर साल एड्स, मलेरिया और टी.बी. से कुल जितने लोग मरते हैं, उससे ज्यादा लोगों को भूख निगल जाती है।
- 79.1 करोड़ ऐसे लोग विकासशील देशों में हैं, जिन्हें भरपेट खाना नहीं मिलता।
- 13.5 प्रतिशत विकासशील देशों की आबादी का वह हिस्सा है, जो कुपोषण का शिकार है।
- 52.6 करोड़ लोग एशिया में आधा पेट खाने को मजबूर है।
- 45 प्रतिशत दुनिया में 5 साल से कम उम्र के बच्चों का हिस्सा है जिसकी कुपोषण से मौत होती है।
- 20 प्रतिशत 5 साल से पहले अंडरवेट बच्चों की मौत के मामले।